मार्गणाओं में उदय-व्युच्छित्ति

श्री आचार्य नेमिचंद्र विरचित

श्री गोम्मटसार कर्मकाण्ड

Presentation Developed By:

Smt. Sarika Vikas Chhabra

तिरियअपुण्णं वेगे, परघादचउक्कपुण्णसाहरणं ।
एइंदियजसथीणति-थावरजुगलं च मिलिदव्वं ॥306॥

☸अर्थ— एकेन्द्रिय मार्गणा में तिर्यंच लब्धि-अपर्याप्तक की 71 प्रकृतियों में परघातादि चार, पर्याप्त, साधारण, एकेन्द्रिय जाति, यशस्कीर्ति, स्त्यानगृद्धि-3, स्थावर और सूक्ष्म दो – ये सब 13 प्रकृतियाँ मिलाकर और ... (शेष आगे की गाथा में) ॥306॥

रिणमंगोवंगतसं, संहदिपंचक्खमेवमिह वियले ।
अवणिय थावरजुगलं, साहरणेयक्खमादावं ॥307॥

❁अर्थ— ...और अंगोपांग, त्रस, सृपाटिका संहनन, पंचेन्द्रिय – इन चार को घटाकर जो 80 प्रकृतियाँ रहती हैं उनका उदय जानना ।

❁इसी प्रकार विकलत्रय के एकेन्द्रिय के समान 80 में स्थावर-सूक्ष्म, साधारण, एकेंद्रिय, आतप – इन 5 को घटाकर तथा ... (शेष आगे की गाथा में) ॥307॥

www.JainKosh.org

खिव तसदुग्गदिदुस्सर-मंगोवंगं सजादिसेवट्टं ।
ओघं सयले साहरणिगिविगलादावथावरदुगूणं ॥308॥

❁अर्थ— ... तथा त्रस, अप्रशस्तविहायोगति, दुःस्वर, अंगोपांग, अपनी-अपनी जाति, सृपाटिका संहनन – ये छह मिलाने से उदय-योग्य 81 प्रकृतियाँ हैं ।

❁सकलेन्द्रिय में गुणस्थान की तरह 122 में से साधारण, एकेन्द्रिय, विकलत्रय, आतप, स्थावर, सूक्ष्म – ये 8 प्रकृतियाँ कम करने पर शेष 114 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥308॥

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय लब्धि-अपर्याप्तक को उदय-योग्य	71
+ परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत	+ 4
+ पर्याप्त, साधारण	+ 2
+ एकेन्द्रिय जाति	+ 1
+ यश	+ 1
+ स्त्यानगृद्धि-3	+ 3
+ स्थावर, सूक्ष्म	+ 2
कुल	84
– अंगोपांग	– 1
– त्रस	– 1
– संहनन	– 1
– पंचेन्द्रिय जाति	– 1
कुल	80

एकेन्द्रिय में उदय-व्युच्छित्ति (80)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5 + स्त्यान-3 + परघात, उद्योत + उच्छ्वास = 11	80	0
2	6 (अन-4 + एकेन्द्रिय + स्थावर	69	11

www.JainKosh.org

विशेष

परघात, उद्योत का उदय शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने के बाद ही होता है ।

स्त्यान-3 का उदय इन्द्रिय पर्याप्ति पूर्ण होने पर ही होता है ।

उच्छ्वास का उदय उच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण होने पर ही होता है ।

ऐसी अवस्था में एकेन्द्रिय जीव मिथ्यादृष्टि ही होता है, सासादन नहीं । इसलिये इन 6 प्रकृतियों की व्युच्छित्ति मिथ्यात्व में ही की है ।

www.JainKosh.org

एकेन्द्रिय के उदय-योग्य प्रकृतिया	80
— सूक्ष्म, साधारण, स्थावर	—3
— एकेन्द्रिय, आतप	—2
कुल	*75*
+ द्वीन्द्रिय जाति	+ 1
+ त्रस	+ 1
+ औदारिक अंगोपांग	+ 1
+ सृपाटिका संहनन	+ 1
+ अप्रशस्त विहायोगति	+ 1
+ दु:स्वर	+ 1
कुल	*81*

द्वीन्द्रिय में उदय-व्युच्छित्ति (81)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व, अपर्याप्त, स्त्यान-3, परघात, उद्योत, उच्छ्वास, अप्रशस्त विहायोगति दु:स्वर = 10	81	0
2	5 (अन-4 + द्वीन्द्रिय जाति)	71	10

www.JainKosh.org

विशेष

दु:स्वर का उदय भाषा पर्याप्ति पूर्ण होने पर ही होता है ।

विहायोगति का उदय शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने पर ही होता है ।

शरीर पर्याप्ति के समय से द्वीन्द्रिय मिथ्यादृष्टि ही होता है । अत: इन प्रकृतियों की व्युच्छित्ति मिथ्यात्व गुणस्थान में ही की है ।

त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय में द्वीन्द्रिय के समान ही है । मात्र जाति बदलनी है ।

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय में उदय-योग्य

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– सूक्ष्म, साधारण, स्थावर	– 3
– एकेन्द्रिय, आतप	– 2
– विकलत्रय	– 3
कुल	114

पंचेन्द्रिय को एकेंद्रिय और विकलत्रय सम्बन्धी प्रकृतियों का उदय संभव नहीं है ।

अतः सर्व उदय-योग्य प्रकृतियों में से तत्संबंधी प्रकृतियाँ घटाई हैं ।

www.JainKosh.org

पंचेन्द्रिय में उदय-व्युच्छित्ति (114)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	2 (मिथ्यात्व, अपर्याप्त)	109	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2, तीर्थंकर
2	4 (अन-4)	106	2 + 5 + नरक-आनु. = 8
3	1	100	6 + 4 + 4 आनुपूर्वी = 14
4	17	104	7 + ती + आ-2 = 10
5	8	87	24 + ती + आ-2 = 27
6	5	81	32 + ती = 33
7	4	76	37 + ती = 38
8	6	72	41 + ती = 42
9	6	66	47 + ती = 48
10	1	60	53 + ती = 54
11	2	59	54 + ती = 55
12	16	57	56 + ती = 57
13	30	42	72
14	12	12	102

एयं वा पणकाये, ण हि साहारणमिणं च आदावं ।
दुसु तद्दुगमुज्जोवं, कमेण चरिमम्हि आदावं ॥309॥

☸अर्थ— पृथिवीकायादि पांचकायों में एकेन्द्रिय की तरह 80 प्रकृतियों में से –

☸पृथिवीकाय में साधारण प्रकृति के घटाने पर उदय-योग्य 79 और जलकाय में साधारण तथा आतप प्रकृति के घटाने पर उदय-योग्य 78 प्रकृतियाँ जानना ।

☸तेज:कायिक-वायुकायिक इन दोनों में साधारण, आतप और उद्योत – ये तीन प्रकृतियाँ घटाने से 77 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं । तथा

☸अंत के वनस्पतिकायिक में केवल आतप प्रकृति घटाने पर 79 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥309॥

www.JainKosh.org

काय मार्गणा

एकेन्द्रिय को उदय-योग्य	80
— साधारण	– 1
कुल	79

पृथ्वीकायिक में उदय-व्युच्छित्ति (79)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	4, स्त्यान-3, परघात, उद्योत, उच्छ्वास	79	0
2	अन-4, एकेन्द्रिय, स्थावर = 6	69	10

जलकायिक में उदय-व्युच्छित्ति (78)

एकेन्द्रिय को उदय-योग्य	80
– साधारण	– 1
– आतप	– 1
कुल	78

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	3, स्त्यान-3, परघात, उच्छ्वास, उद्योत	78	0
2	अन-4, एकेन्द्रिय, स्थावर = 6	69	9

www.JainKosh.org

अग्नि, वायुकायिक

एकेन्द्रिय को उदय-योग्य	80
– साधारण	– 1
– आतप, उद्योत	– 2
कुल	77

अग्नि, वायुकायिक में उदय-योग्य प्रकृतिया 77 हैं ।

इनमें एक मिथ्यादृष्टि गुणस्थान ही पाया जाता है ।

www.JainKosh.org

वनस्पतिकायिक में उदय-व्युच्छित्ति (79)

एकेन्द्रिय को उदय-योग्य	80
– आतप	– 1
कुल	79

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व, अपर्याप्त, साधारण, सूक्ष्म, स्त्यान-3, परघात, उच्छ्वास, उद्योत	79	0
2	6	69	10

www.JainKosh.org

ओघं तसे ण थावर-दुगसाहरणेयतावमथ ओघं ।
मणवयणसत्तगे ण हि, ताविगिविगलं च थावराणुचओ ॥310॥

❁अर्थ— त्रसकाय वालों के गुणस्थान सामान्य की 122 में से स्थावर-सूक्ष्म, साधारण, एकेन्द्रिय और आतप – ये पाँच प्रकृतियाँ नहीं होतीं । अतः 117 प्रकृतियाँ उदय होने योग्य हैं ।

❁इसके बाद 4 मनोयोग, 3 वचनयोग मिलकर सब सात योगों में आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रय, स्थावर आदि 4, आनुपूर्वी 4 – ये 13 प्रकृतियाँ नहीं होतीं । अतः 109 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥310॥

त्रस में उदय-व्युच्छित्ति (117)

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– सूक्ष्म, साधारण	– 2
– एकेन्द्रिय, स्थावर	– 2
– आतप	– 1
कुल	117

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	2	112	5
2	7	109	2 + 5 + नरक आनुपूर्वी = 8
3	1	100	9 + 4 + 4 आनुपूर्वी = 17
4	17	104	10 + 3 = 13
5	8	87	27+ 3 = 30
6	5	81	35 + 1 = 36
7	4	76	40 + 1 = 41
8	6	72	44 + 1 = 45
9	6	66	50 + 1 = 51
10	1	60	56 + 1 = 57
11	2	59	57 + 1 = 58
12	16	57	59 + 1 = 60
13	30	42	75
14	12	12	105

मनोयोग में उदय-व्युच्छित्ति (109)

4 मनोयोग, सत्य, असत्य, उभय वचन योग	
कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– एकेन्द्रिय, विकलत्रय जाति	– 4
– स्थावर, आतप	– 2
– अपर्याप्त, सूक्ष्म, साधारण	– 3
– आनुपूर्वी	– 4
कुल	109

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	104	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2, ती.
2	अन-4	103	1 + 5 = 6
3	1	100	5 + 4 = 9
4	13	100	6 + 3 = 9
5	8	87	19 + 3 = 22
6	5	81	27 + 1 = 28
7	4	76	32 + 1 = 33
8	6	72	36 + 1 = 37
9	6	66	42 + 1 = 43
10	1	60	48 + 1 = 49
11	2	59	49 + 1 = 50
12	16	57	51 + 1 = 52
13	42	42	67

असत्य और उभय मनोयोग, वचन योग

इसी प्रकार असत्य और उभय मनोयोग, वचन योग में जानना ।

परन्तु गुणस्थान 12 ही होते हैं और

तीर्थंकर प्रकृति उदय-योग्य नहीं होने से कुल उदय योग्य प्रकृतियाँ 108 होती हैं ।

12वें गुणस्थान में व्युच्छित्ति 16 की होती है ।

www.JainKosh.org

अणुभयवचि वियलजुदा, ओघमुराले ण हारदेवाऊ ।
वेगुव्वछक्कणरतिरियाणु अपज्जत्तणिरयाऊ ॥311॥

- अर्थ— अनुभय वचन-योग में 109 प्रकृतियों में विकलत्रय मिलाकर 112 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।
- औदारिक योग में 122 में से आहारक-2, देवायु, वैक्रियिक-षट्क, मनुष्य-गत्यानुपूर्वी, तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी, अपर्याप्त, नरकायु, – ये 13 न होने से 109 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥311॥

अनुभय वचन योग

अनुभय वचन योग विकलत्रय में भी पाया जाता है । अत: तत्संबंधी प्रकृतिया भी उदय-योग्य हैं ।

सत्य वचन योग में उदय-योग्य	109
+ 3 विकलत्रय	+3
उदय-योग्य प्रकृतियाँ	112

सारी रचना सत्य वचनयोग की भांति, परन्तु सासादन में 3 की व्युच्छित्ति बढ़ जायेगी । अनुदय प्रकृतियों की संख्या बदलेगी ।

www.JainKosh.org

औदारिक काययोग में व्युच्छित्ति (109)

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– वैक्रियिक-6	– 6
– देवायु, नरकायु	– 2
– मनुष्यानुपूर्वी, तिर्यंचानुपूर्वी	– 2
– आहारक-2	– 2
– अपर्याप्त	– 1
कुल	109

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	4	106	सम्यक्त्व, मिश्र, ती.
2	9	102	4 + 3 = 7
3	1	94	13 + सम्यक्त्व, ती. = 15
4	7 (अप्र-4, दुर्भग-3)	94	14 + ती. = 15
5	8	87	21 + ती. = 22
6	3	79	29 + ती. = 30
7	4	76	32 + ती. = 33
8	6	72	36 + ती. = 37
9	6	66	42 + ती. = 43
10	1	60	48 + ती. = 49
11	2	59	49 + ती. = 50
12	16	57	51 + ती. = 52
13	42	42	67

तम्मिस्सेऽपुण्णजुदा, ण मिस्सथीणतियसरविहायदुगं ।
परघादचओ अयदे, णादेज्जदुदुब्भगं ण संढिच्छी ॥312॥
साणे तेसिं छेदो, वामे चत्तारि चोद्दसा साणे ।
चउदालं वोच्छेदो, अयदे जोगिम्हि छत्तीसं ॥313॥जुम्मं ।

❁अर्थ— औदारिक मिश्रकाय योग में औदारिक काययोग की 109 में अपर्याप्त प्रकृति मिलती है और मिश्र प्रकृति, स्त्यानगृद्धि-3, दो स्वर, विहायोगति-2, परघातादि चार – ये 12 प्रकृतियाँ नहीं हैं; इस कारण 98 उदय-योग्य हैं ।

❁चौथे असंयत गुणस्थान में अनादेय, अयश, दुर्भग, नपुंसकवेद, स्त्री वेद इनका उदय नहीं है; इस कारण इन प्रकृतियों की व्युच्छित्ति सासादन गुणस्थान में ही जाननी ।

❁इसके मिथ्यात्व गुणस्थान में मिथ्यात्व, सूक्ष्मत्रय – ये चार व्युच्छिन्न होती हैं । सासादन में अनंतानुबंधी आदि 14, असंयत में अप्रत्याख्यानादि 44 तथा सयोग-केवली के 36 प्रकृतियों की उदय-व्युच्छित्ति जानना ॥312-313॥

www.JainKosh.org

औदारिक मिश्र काययोग

औदारिक काययोग में उदय-योग्य	109
– स्त्यान-3	– 3
– मिश्र	– 1
– स्वर-2	– 2
– विहायोगति-2	– 2
– परघात-4	– 4
कुल	97
+ अपर्याप्त	+ 1
कुल	98

औदारिक मिश्र लब्धि-अपर्याप्त के भी होता है एवं निर्वृत्ति-अपर्याप्त के भी । लब्धि अपर्याप्त की अपेक्षा अपर्याप्त प्रकृति का उदय है, निर्वृत्ति-अपर्याप्त की अपेक्षा पर्याप्त प्रकृति का उदय है ।

शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने के पश्चात् ही जिनका उदय होता है, ऐसी स्त्यान-3, परघात आदि प्रकृतिया यहाँ उदय-योग्य नहीं होती ।

www.JainKosh.org

औदारिक मिश्र में उदय-व्युच्छित्ति (98)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व, अपर्याप्त, साधारण, सूक्ष्म	96	सम्यक्त्व, तीर्थंकर
2	9 + नपुंसक, स्त्री वेद + दुर्भग-3 = 14	92	4 + 2 = 6
4	4 + 7 + 0 + 4 + 6 + 4 + 1 + 2 + 16 = 44	79	18 + ती = 19
13	36	36	62

www.JainKosh.org

विशेष

जिस मार्गणा में बीच के गुणस्थान नहीं हैं, वहाँ आगे के गुणस्थानों की व्युच्छित्ति पूर्व के पाये जाने वाले गुणस्थान में ही होती है ।

इसलिये यहाँ चतुर्थ गुणस्थान में शेष (5 से 12) गुणस्थानों की व्युच्छित्ति होती है ।

www.JainKosh.org

देवोघं वेगुव्वे, ण सुराणू पक्खिवेज्ज णिरयाऊ ।
णिरयगदिहुंडसंढं, दुग्गदि दुब्भगचओ णीचं ॥314॥

❁अर्थ— वैक्रियिक काययोग में देवगतिवत् 77 प्रकृतियों में देवानुपूर्वी के घटाने और नरकायु, नरकगति, हुण्डक संस्थान, नपुंसक-वेद, अप्रशस्त विहायोगति, दुर्भगादि चार, नीच गोत्र – ये 10 मिलाने से 86 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥314॥

देवगति में उदय-योग्य	77
– देवानुपूर्वी	– 1
कुल	76
+ नरकायु	+ 1
+ नरक गति	+ 1
+ हुंडक संस्थान	+ 1
+ अप्रशस्त विहायोगति	+ 1
+ दुर्भग-4	+ 4
+ नीच गोत्र	+ 1
+ नपुंसक वेद	+ 1
कुल	86

वैक्रियिक काययोग में व्युच्छित्ति (86)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	84	सम्यक्त्व, मिश्र
2	4	83	1 + 2 = 3
3	1	80	5 + 1 = 6
4	13	80	6

वैक्रियिक काययोग में नरक गति संबंधित प्रकृतियाँ भी जोड़ी जाती हैं क्योंकि वैक्रियिक काययोग नरक गति और देवगति में पाया जाता है ।

वेगुव्वं वा मिस्से, ण मिस्स परघादसरविहायदुगं ।
साणे ण हुंडसंढं, दुब्भगणादेज्ज अज्जसयं ॥315॥
णिरयगदिआउणीचं, ते खित्तयदेऽवणिज्ज थीवेदं ।
छट्ठगुणं वाहारे, ण थीणतियसंढथीवेदं ॥316॥जुम्मं ।

❁अर्थ— वैक्रियिक मिश्रकाययोग में वैक्रियिक काययोग की 86 प्रकृतियों से मिश्रमोहनीय, परघात-स्वर-विहायोगति इनका जोड़ा – ये 7 प्रकृतियाँ उदयरूप नहीं हैं, इस कारण 79 प्रकृतियाँ उदय-योग्य जानना ।

❁उनमें भी सासादन गुणस्थान में हुण्डक संस्थान, नपुंसक-वेद, दुर्भग अनादेय, अयशस्कीर्ति, नरकगति, नरकायु, नीचगोत्र – इनका उदय नहीं है क्योंकि सासादन गुणस्थान वाला मरकर नरक को नहीं जाता । किंतु असंयत में इन प्रकृतियों का उदय रहता है ।

❁सासादन में स्त्रीवेद और अनंतानुबंधी चार – इन पाँच की व्युच्छित्ति है । असंयत में अप्रत्याख्यान कषाय 4, वैक्रियिक-2, देवगति, नरकगति, देवायु, नरकायु और दुर्भगादि 3 – ऐसे 13 प्रकृतियों की व्युच्छित्ति होती है ।

❁आहारक काययोग में छठे गुणस्थान की उदय-योग्य 81 प्रकृतियों में से स्त्यान-3, स्त्री वेद, नपुंसक वेद और (शेष आगे की गाथा में) उदय-योग्य नहीं हैं ॥315-316॥

www.JainKosh.org

वैक्रियिक मिश्र

वैक्रियिक काययोग में उदय-योग्य	86
— मिश्र मोहनीय	— 1
— परघात, उच्छ्वास	— 2
— विहायोगति	— 2
— स्वर	— 2
कुल	79

मिश्र प्रकृति का उदय मिश्र गुणस्थान में ही होता है । वैक्रियिक मिश्र काययोग में मिश्र गुणस्थान नहीं है । अत: मिश्र प्रकृति यहाँ उदय-योग्य नहीं है ।

परघात, विहायोगति का उदय शरीर पर्याप्ति पूर्ण होने पर होता है,

उच्छ्वास का उदय उच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण होने पर होता है,

स्वर का उदय भाषा पर्याप्ति पूर्ण होने पर होता है,

यहाँ ये सब पर्याप्तिया पूर्ण नहीं हुई हैं, इसलिये ये प्रकृतिया यहाँ उदय-योग्य नहीं हैं ।

वैक्रियिक मिश्र में उदय-व्युच्छित्ति (79)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	78	सम्यक्त्व
2	अन-4, स्त्रीवेद = 5	69	मिथ्यात्व + सम्यक्त्व + नपुंसक वेद, हुंडक, दुर्भग-3, नरकगति, नरकायु, नीचगोत्र = 10
4	अप्र-4, देवगति, नरकगति, वैक्रियिक-2, देवायु, नरकायु, दुर्भग-3 = 13	73	6

वैक्रियिक मिश्र में सासादन गुणस्थान मात्र देवों के ही संभव है इसलिये नरक गति सम्बंधित प्रकृतियाँ यहाँ उदय-योग्य नहीं हैं ।

दुग्गदिदुस्सरसंहदि, ओरालदु चरिमपंचसंठाणं ।
ते तम्मिस्से सुस्सर, परघाददुसत्थगदि हीणा ॥317॥

- अर्थ— अप्रशस्त विहायोगति, दुःस्वर, संहनन 6, औदारिक-2, अंत के पांच संस्थान – इन 20 प्रकृतियों का उदय नहीं है । और
- आहारकमिश्र काययोग में इन 61 में से सुस्वर, परघात-2, प्रशस्त विहायोगति – इन चार को घटाने से उदय-योग्य 57 प्रकृतियाँ हैं ॥317॥

आहारक काययोग

आहारक काययोग छठे गुणस्थान में ही होता है । छठे की उदय-योग्य 81 में से 20 प्रकृतिया घटाने पर 61 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।

छठे में उदय-योग्य प्रकृतिया	81
— स्त्री, नपुंसकवेद	— 2
— स्त्यान-3	— 3
— अप्रशस्त विहायोगति	— 1
— दुःस्वर	— 1
— संहनन	— 6
— 5 संस्थान	— 5
— औदारिक-2	— 2
कुल	61

www.JainKos

आहारक काययोग

आहारक योग मात्र पुरुषवेदी के ही होता है, अतः शेष 2 वेद उदय-योग्य नहीं हैं ।

आहारक काययोग के समय तीव्र निद्राओं का उदय नहीं होता, अतः स्त्यान-3 उदय-योग्य नहीं हैं ।

आहारक शरीर संहनन रहित है, अतः 6 संहनन उदय-योग्य नहीं हैं,

आहारक शरीर का मात्र समचतुरस्र संस्थान होता है, अतः शेष 5 संस्थान उदय-योग्य नहीं हैं ।

3 प्रकार के शरीरों में से एक समय में एक का ही उदय होता है, इसलिये औदारिक-2 उदय-योग्य नहीं हैं ।

आहारक के काल में प्रशस्त कर्मों का उदय होता है, अतः अप्रशस्त विहायोगति और दुःस्वर उदय-योग्य नहीं हैं ।

आहारक मिश्र काययोग

आहारक काययोग में उदय-योग्य	61
– प्रशस्त विहायोगति, परघात	– 2
– उच्छ्वास	– 1
–सुस्वर	– 1
कुल	57

इन 4 प्रकृतियों का उदय यथायोग्य पर्याप्ति पूर्ण होने पर होता है, अतः अपर्याप्त अवस्था में ये उदय-योग्य नहीं हैं ।

www.JainKosh.org

ओघं कम्मे सरगदि-पत्तेयाहारुरालदुग मिस्सं ।
उवघादपणविगुव्वदु, थीणतिसंठाण-संहदी णत्थि ॥318॥

☸अर्थ— कार्मण काययोग में सामान्य गुणस्थान की 122 प्रकृतियों से स्वर-विहायोगति-प्रत्येक-आहारकशरीर-औदारिकशरीर – इन सबका युगल, मिश्र मोहनीय, उपघातादि पाँच, वैक्रियिक-2, स्त्यानगृद्धि-3, संस्थान 6, संहनन 6 – ये सब नहीं होने से उदय-योग्य 89 प्रकृतियाँ हैं ॥318॥

कार्मण काययोग

3 शरीर नामकर्म का उदय होने पर ही शरीर संबंधी प्रकृतिया उदय-योग्य होती हैं ।

विग्रहगति में 3 शरीरों का उदय नहीं होता । मात्र तैजस, कार्मण का ही उदय पाया जाता है, अतः तत्संबंधी प्रकृतियों को घटाया है ।

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– मिश्र	– 1
– औदारिक-2	– 2
– वैक्रियिक-2	– 2
– आहारक-2	– 2
– स्त्यान-3	– 3
– संस्थान	– 6
– संहनन	– 6
– विहायोगति-2	– 2
– प्रत्येक, साधारण	– 2
– स्वर-2	– 2
– परघात, उपघात, उच्छ्वास	– 3
– आतप, उद्योत	– 2
कुल	89

प्रश्न: विग्रहगति में कार्मण काययोग होता है, पर सयोगकेवली के तो विग्रहगति नहीं होती । उनके कार्मण योग कैसे होगा ?

उत्तर: 'जो विग्रहगति में है, वही कार्मण योग है'— ऐसा नियम नहीं कहा है । कार्मण योग विग्रहगति में भी है, अन्यत्र सयोगकेवली के भी है ।

www.JainKosh.org

साणे थीवेदछिदी, णिरयदुणिरयाउगं ण तियदसयं ।
इगिवण्णं पणवीसं, मिच्छादिसु चउसु वोच्छेदो ॥319॥

- अर्थ— उसमें भी सासादन गुणस्थान में स्त्रीवेद की व्युच्छित्ति होती है । और नरक-2, नरकायु – इन तीन का उदय नहीं होता ।
- मिथ्यात्वादि चार गुणस्थानों में क्रम से 3, 10, 51, 25 प्रकृतियों की उदय-व्युच्छित्ति होती है ॥319॥

www.JainKosh.org

कार्मण योग में उदय-व्युच्छित्ति (89)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व, अपर्याप्त, सूक्ष्म	87	सम्यक्त्व, तीर्थंकर = 2
2	9, स्त्रीवेद = 10	81	3 + 2, नरक-आनु., नरकायु, नरकगति = 8
4	15 + 7 + 0 + 1 + 6 + 5 + 1 + 0 + 16 = 51	75	13 + ती. = 14
13	25	25	64

www.JainKosh.org

मूलोघं पुंवेदे, थावरचउणिरयजुगलतित्थयरं ।
इगिविगलं थीसंढं, तावं णिरयाउगं णत्थि ॥320॥

- अर्थ— पुरुष-वेद में मूलवत् 122 प्रकृतियों में से स्थावर आदि चार, नरक-द्विक, तीर्थंकर प्रकृति, एकेन्द्रिय, विकलत्रय, स्त्री वेद, नपुंसक वेद, आतप प्रकृति, नरकायु – ये 15 उदय-योग्य नहीं हैं ।
- इस कारण उदय-योग्य 107 प्रकृतियाँ हैं ॥320॥

www.JainKosh.org

पुरुष वेद

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– स्त्री वेद, नपुंसक वेद	– 2
– नरकायु	– 1
– नरकगति	– 2
– स्थावर-4	– 4
– 4 जाति	– 4
– आतप	– 1
– तीर्थंकर	– 1
कुल	107

1 वेद के साथ अन्य वेद का उदय नहीं होता, अतः 2 वेद उदय-योग्य नहीं हैं ।

नरक गति में नपुंसक वेद ही होता है, अतः नरकगति संबंधी प्रकृतिया उदय-योग्य नहीं हैं ।

एकेन्द्रिय, विकलत्रय में नपुंसक वेद ही होता है, अतः तत्संबंधी प्रकृतिया उदय-योग्य नहीं हैं ।

तीर्थंकर प्रकृति का उदय अपगतवेदी के ही होता है, अतः तीर्थंकर प्रकृति उदय-योग्य नहीं है ।

पुरुष एवं स्त्रीवेदी पर्याप्त ही होते हैं, अतः अपर्याप्त प्रकृति उदय-योग्य नहीं है ।

पुरुषवेद में उदय-व्युच्छित्ति (107)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	103	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2
2	4	102	1 + 4 = 5
3	1	96	5 + सम्यक्त्व, आ-2 + 3 आनुपूर्वी = 11
4	14 (अप्र-4, देवगति-2, देवायु, वैक्रियिक-2, दुर्भग-3, मनुष्य-आनु, तिर्यंच-आनुपूर्वी)	99	6 + आ-2 = 8
5	8	85	20 + आ-2 = 22
6	5	79	28
7	4	74	33
8	6	70	37
9	64	64	43

इत्थीवेदेवि तहा, हारदुपुरिसूणमित्थिसंजुत्तं ।
ओघं संढे ण हि सुर-हारदुथीपुंसुराउतित्थयरं ॥321॥

- अर्थ— स्त्री वेद में भी उसी प्रकार 107 प्रकृतियों में आहारक-2, पुरुषवेद प्रकृतियाँ कम करके तथा स्त्रीवेद मिला के 105 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।
- नपुंसक वेद में सामान्यवत् 122 में से देव-2, आहारक-2, स्त्री वेद, पुरुष वेद, देवायु और तीर्थंकर – ये प्रकृतियाँ उदय-योग्य नहीं होने से शेष 114 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥321॥

स्त्रीवेद में उदय-व्युच्छित्ति (105)

पुरुषवेद में उदय-योग्य प्रकृतिया	107
– पुरुषवेद	– 1
– आहारक-2	– 2
कुल	104
+ स्त्रीवेद	+ 1
कुल	105

सारा कथन पुरुषवेद की भांति है । परन्तु आ-2 प्रकृतियों का अंतर पड़ेगा । आप स्वयं बनाइये ।

नपुंसकवेद

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– पुरुष, स्त्री वेद	– 2
– देव-2	– 2
– देवायु	– 1
– आहारक-2	– 2
– तीर्थंकर	– 1
कुल	114

देवगति में स्त्री, पुरुष ही होते हैं, नपुंसक नहीं । अतः देवगति संबंधी प्रकृतिया घटायी ।

नपुंसक, स्त्रीवेद में आहारक-2 का उदय नहीं होता, अतः आहारक-2 घटायी ।

1 वेद के उदय में अन्य वेद नहीं होते, अतः शेष 2 वेदों को घटाया ।

www.JainKosh.org

नपुंसक वेद में उदय-व्युच्छित्ति (114)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5	112	सम्यक्त्व, मिश्र = 2
2	9 + मनु. आनुपूर्वी, तिर्यंच आनु. = 11	106	5 + 2, नरक-आनु. = 8
3	1	96	16 + सम्यक्त्व, नरक-आनु. = 18
4	12 (अप्र-4, नरक-2, नरकायु, वैक्रियिक-2, दुर्भग-3)	97	17
5	8	85	29
6	3	77	37
7	4	74	40
8	6	70	44
9	64	64	50

तित्थयरमाणमाया-लोहचउक्कूणमोघमिह कोहे ।
अणरहिदे णिगिविगलं, तावऽणकोहाणुथावरचउक्कं ॥322॥

❁अर्थ— क्रोध कषाय मार्गणा में सामान्य 122 में से तीर्थंकर प्रकृति, तथा चार तरह के क्रोध को छोड़ बाकी मान-माया-लोभ-चतुष्क (तीन चौकड़ी) संबंधी 12 कषाय — इन 13 के बिना 109 प्रकृतियाँ उदय-योग्य है । तथा

❁अनंतानुबंधी रहित क्रोध में एकेन्द्रिय, विकलत्रय, आतप, अनंतानुबंधी क्रोध, आनुपूर्वी 4, स्थावर आदि 4 — ये 14 प्रकृतियाँ तथा सम्यक्त्व, मिश्र और आहारक-2 — ये चार प्रकृतियाँ; कुल 18 उदय-योग्य नहीं होने से 109 प्रकृतियों में से शेष 91 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥322॥

www.JainKosh.org

क्रोध कषाय

उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– 4 मान, 4 माया, 4 लोभ	– 12
– तीर्थंकर	– 1
कुल	109

एक समय में एक ही कषाय का उदय होता है, अतः शेष 3 कषायों को घटाया है ।

अकषायी जीव को तीर्थंकर प्रकृति का उदय आता है । अतः कषायों में तीर्थंकर प्रकृति उदय-योग्य नहीं है ।

क्रोध कषाय में उदय-व्युच्छित्ति (109)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5	105	सम्यक्त्व, मिश्र, आहारक-2
2	अन. क्रोध, एकेन्द्रिय-4, स्थावर = 6	99	5 + 4, नरक-आनु = 10
3	1	91	11 + सम्यक्त्व, आ-2, 4 आनु. = 18
4	अप्र. क्रोध, वैक्रियिक-6, नरकायु, देवायु, दुर्भग-3, मनुष्य-आनु, तिर्यंच-आनुपूर्वी = 14	95	12 + आ-2 = 14
5	प्रत्या. क्रोध, तिर्यंच गति, तिर्यंच आयु, उद्योत, नीच गोत्र = 5	81	26 + आ-2 = 28
6	5	78	31
7	4	73	36
8	6	69	40
9	63	63	46

अनंतानुबंधी क्रोध से रहित जीव के उदय-योग्य प्रकृति

क्रोध कषाय में उदय प्रकृतिया	109
– 4 जाति	– 4
– स्थावर-4	– 4
– आतप	– 1
– 4 आनुपूर्वी	– 4
– अनंतानुबंधी क्रोध	– 1
– सम्यक्त्व	– 1
– मिश्र	– 1
– आ-2	– 2
कुल	91

विशेष

जो सम्यग्दृष्टि अनंतानुबंधी की विसंयोजना कर देता है, उसके पश्चात् पुनः मिथ्यात्व को प्राप्त हो जाता है, उसके अनंतानुबंधी कषाय का उदय एक आवली काल तक नहीं पाया जाता है ।

उस जीव के मिथ्यात्व गुणस्थान में 91 प्रकृतिया उदय-योग्य हैं ।

ऐसा जीव जब तक अनंतानुबंधी कषाय का उदय प्रारंभ नहीं हो जाता, तब तक मरण नहीं करता है, संज्ञी पंचेन्द्रिय बना रहता है । इसलिये तत्संबंधी प्रकृतिया घटायी हैं ।

www.JainKosh.org

एवं माणादितिए, मदिसुदअण्णाणगे दु सगुणोघं ।
वेभंगेवि ण ताविगि-विगलिंदी थावराणुचऊ ॥323॥

- अर्थ— इसी प्रकार मानादि तीन कषायों में भी अपने से अन्य 12 कषाय तथा तीर्थंकर प्रकृति – इन 13 के न होने से 109 सब जगह उदय-योग्य समझना ।
- ज्ञान मार्गणा में से कुमति और कुश्रुतज्ञान में सामान्य गुणस्थानवत् 122 में से सम्यक्त्व, मिश्र, तीर्थंकर, आहारक-2 – इन 5 के सिवाय 117 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।
- विभंगज्ञान में भी इन 117 में से आतप, एकेन्द्रिय, विकलेन्द्रिय 3, स्थावरादि चार, आनुपूर्वी 4 – सब मिलकर 13 प्रकृतियाँ उदय न होने के कारण 104 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ॥323॥

www.JainKosh.org

क्रोध कषाय की भांति मान, माया, लोभ में भी जानना चाहिए ।

लोभ कषाय में गुणस्थान सूक्ष्म-सांपराय तक हैं ।

ज्ञान मार्गणा

कुमति-कुश्रुत में उदय-व्युच्छित्ति (117)

कुल उदय प्रकृतिया	122
– सम्यक्त्व, मिश्र	– 2
– आहारक-2	– 2
– तीर्थंकर	–1
कुल	117

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5, नारकानुपूर्वी	117	0
2	9	111	6

www.JainKosh.org

विभंगज्ञान में उदय-व्युच्छित्ति (104)

कुमतिज्ञान में उदय-योग्य प्रकृतिया 117	
– 4 जाति	– 4
– स्थावर	– 4
– आतप	– 1
– आनुपूर्वी 4	– 4
कुल	104

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व	104	0
2	अन-4	103	1

विभंगज्ञान पंचेन्द्रिय पर्याप्तक को पर्याप्त अवस्था में ही होता है ।
इसलिये एकेन्द्रिय, विकलत्रय और विग्रहगति संबंधी प्रकृतिया घटाई हैं ।

सण्णाणपंचयादी, दंसणमग्गणपदोत्ति सगुणोघं ।
मणपज्जवपरिहारे, णवरि ण संढित्थिहारदुगं ॥324॥

❁अर्थ— पांच सम्यग्ज्ञान से लेकर दर्शन मार्गणास्थानपर्यंत अपने-अपने गुणस्थान सरीखी रचना समझना । लेकिन मनःपर्ययज्ञान और परिहारविशुद्धि संयम को छोड़ देना । क्योंकि इसमें विशेषता यह है कि नपुंसकवेद, स्त्रीवेद और आहारक-2 – ये चार उदय-योग्य नहीं हैं ॥324॥

मति, श्रुत, अवधिज्ञान में उदय-व्युच्छित्ति (106)

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– प्रथम गुणस्थान में व्युच्छिन्न	– 5
– द्वितीय गुणस्थान में व्युच्छिन्न	– 9
– तृतीय गुणस्थान में व्युच्छिन्न	– 1
– तीर्थंकर	– 1
कुल	106

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
4	17	104	आ-2
5	8	87	17 + 2 = 19
6	5	81	25
7	4	76	30
8	6	72	34
9	6	66	40
10	1	60	46
11	2	59	47
12	16	57	49

मन:पर्यय ज्ञान में उदय-व्युच्छित्ति (77)

छठे में उदय-योग्य प्रकृतिया	81
– स्त्री वेद, नपुंसक वेद	– 2
– आहारक-2	– 2
कुल	77

मन:पर्ययज्ञान पुरुषवेदी के ही होता है । अत: शेष वेद उदय-योग्य नहीं हैं ।

मन:पर्ययज्ञान के साथ आहारक ऋद्धि का प्रयोग नहीं होता है । अत: आहारक-2 उदय-योग्य नहीं हैं ।

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
6	3	77	0
7	4	74	3
8	6	70	7
9	4	64	13
10	1	60	17
11	2	59	18
12	16	57	20

केवलज्ञान
सयोगकेवली में
उदय-योग्य प्रकृतियाँ = 42

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
13	30	42	0
14	12	12	30

www.jinkosh.org

संयम मार्गणा

सामायिक, छेदोपस्थापना संयम (81)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
6	5	81	0
7	4	76	5
8	6	72	9
9	6	66	15

परिहार-विशुद्धि में उदय-व्युच्छित्ति (77)

सामायिक संयम में उदय-योग्य	81
– स्त्री, नपुंसक वेद	– 2
– आहारक-2	– 2
कुल	77

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
6	3	77	0
7	4	74	3

www.Jain[illegible].org

यथाख्यात संयम (60)

सूक्ष्म-सांपराय संयम में गुणस्थानवत् उदय-योग्य प्रकृतिया= 60

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
11	2	59	1 तीर्थंकर
12	16	57	2 + 1 = 3
13	30	42	18
14	12	12	48

ww.JainKosh.org

असंयम में उदय-व्युच्छित्ति (119)

कुल उदय प्रकृतिया	122
– आहारक-2	– 2
– तीर्थंकर	– 1
कुल	119

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5	117	सम्यक्त्व, मिश्र
2	9	111	5 + 2, नरक-आनु. = 8
3	1	100	14 + सम्यक्त्व, 4 आनु. = 19
4	17	104	15

देशसंयम में पंचम गुणस्थान की
उदय-योग्य प्रकृतिया = 87

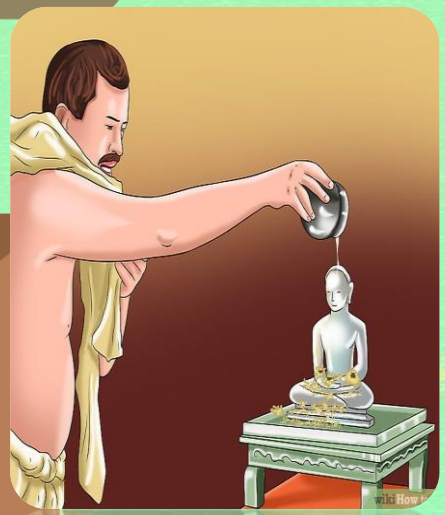

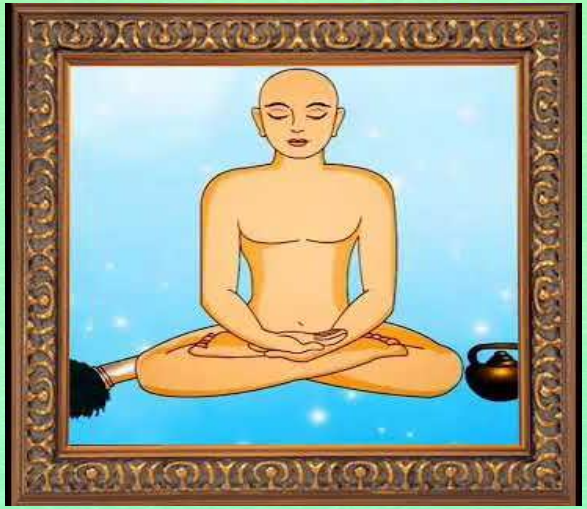

सूक्ष्मसाम्पराय संयम में
उदय-योग्य प्रकृतिया = 60

www.jainkosh.org

चक्खुम्मि ण साहारण-ताविगिबितिजाइ थावरं सुहुमं ।
किण्हदुगे सगुणोघं, मिच्छे णिरयाणु वोच्छेदो ॥325॥

❁अर्थ— दर्शन-मार्गणा के चक्षुदर्शन में 122 में से साधारण, आतप, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय जाति, त्रीन्द्रिय जाति, स्थावर, सूक्ष्म, तीर्थंकर प्रकृति – इन 8 का उदय न होने के कारण 114 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।

❁लेश्या मार्गणा में कृष्ण, नील – इन दो लेश्याओं में अपने-अपने गुणस्थानवत् तीर्थंकरादि तीन प्रकृतियों के सिवाय 119 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं । लेकिन मिथ्यादृष्टि गुणस्थान में नरक-गत्यानुपूर्वी की भी व्युच्छित्ति समझना ॥325॥

www.JainKosh.org

दर्शन मार्गणा
चक्षुदर्शन

उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– 3 जाति	– 3
– स्थावर-3	– 3
– आतप	– 1
– तीर्थंकर	– 1
कुल	114

चक्षुदर्शन चतुरिन्द्रिय से ही प्रारंभ होता है । अतः शेष 3 इन्द्रिय संबंधी प्रकृतियों को घटाया है ।

चक्षुदर्शन 12वें गुणस्थान तक ही होता है । अतः तीर्थंकर प्रकृति को घटाया है ।

www.JainKosh.org

चक्षुदर्शन में उदय-व्युच्छित्ति (114)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व, अपर्याप्त	110	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2
2	अन-4, चतुरिन्द्रिय	107	2 + 4, नरकानु. = 7
3	1	100	7 + सम्यक्त्व, आहारक-2, 4 आनु.
4	17	104	8 + आ-2 = 10
5	8	87	25 + 2 = 27
6	5	81	33
7	4	76	38
8	6	72	42
9	6	66	48
10	1	60	54
11	2	59	55
12	16	57	57

दर्शन मार्गणा

अचक्षुदर्शन में उदय-योग्य प्रकृतियों में तीर्थंकर प्रकृति कम करना । शेष कथन गुणस्थानवत् । मात्र अनुदय संख्या में एक कम रखना ।

अवधिदर्शन में अवधिज्ञानवत् जानना ।

केवलदर्शन में केवलज्ञानवत् जानना ।

www.JainKosh.org

कृष्ण, नील लेश्या में उदय-व्युच्छित्ति (119)

कृष्ण, नील, कापोत लेश्या में प्रथम चार गुणस्थान ही होते हैं । अत: आहारक-2, तीर्थंकर प्रकृति उदय-योग्य नहीं हैं ।

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया 122

– आहारक-2 – 2

– तीर्थंकर – 1

कुल 119

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5 + नारकानुपूर्वी	117	सम्यक्त्व, मिश्र
2	9, देव-2, देवायु, तिर्यंच-आनुपूर्वी = 13	111	6 + 2 = 8
3	1	98	19 + सम्यक्त्व, मनु. आनु = 21
4	12	99	20

www.JainKosh.org

साणे सुराउसुरगदि-देवतिरिक्खाणुवोच्छिदी एवं ।
काओदे अयदगुणे, णिरयतिरिक्खाणुवोच्छेदो ॥326॥

❁अर्थ— सासादन गुणस्थान में देवायु, देवगति, देव-गत्यानुपूर्वी, तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी – इन चार की व्युच्छित्ति जाननी ।

❁इसी प्रकार 119 प्रकृतियाँ कपोत लेश्या में भी हैं, परंतु असंयत-गुणस्थान में नरक-गत्यानुपूर्वी और तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी की व्युच्छित्ति है ॥326॥

www.Ja n.org

कपोत लेश्या में उदय-व्युच्छित्ति (119)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5	117	सम्यक्त्व, मिश्र
2	9, देव-2, देवायु = 12	111	5 + 2, नरकानुपूर्वी
3	1	98	17 + सम्यक्त्व, 3 आनु. = 21
4	अप्र-4, नरक-4, नरकायु, मनुष्य-आनु, तिर्यंच-आनु, दुर्भग-3 = 14	101	18

www.JainKosh.org

विशेष

सम्यग्दृष्टि मरणकर प्रथम नरक, भोगभूमि तिर्यंच, भोगभूमि मनुष्य में जन्म ले सकता है । इन अवस्थाओं में कपोत लेश्या पायी जाती है । इसलिये 3 आनुपूर्वी का उदय चतुर्थ गुणस्थान में कपोत लेश्या के साथ संभव है ।

यदि सम्यग्दृष्टि मरणकर देव में जाता है, तो नियम से वैमानिक में ही जन्म लेगा । वहाँ शुभ लेश्या ही होती है, अशुभ नहीं । इसलिये देवगति संबंधी प्रकृतियों की व्युच्छित्ति कपोत लेश्या में दूसरे गुणस्थान में ही की है ।

www.JainKosh.org

तेउतिये सगुणोघं, णादाविगिविगल थावरचउक्कं ।
णिरयदुतदाउतिरियाणुगं णराणू ण मिच्छदुगे ॥327॥

❁अर्थ— तेजो लेश्यादि तीन शुभलेश्याओं में अपने-अपने गुणस्थानवत् 122 में से आतप, एकेन्द्रिय, विकलत्रय, स्थावर-4, नरक-2, नरकायु, तिर्यंच-गत्यानुपूर्वी — ये 13 प्रकृतियाँ उदय-योग्य नहीं हैं ।

❁उसमें भी मिथ्यादृष्टि आदि दो गुणस्थानों में मनुष्य-गत्यानुपूर्वी का भी उदय नहीं है ॥327॥

www.JainKosha.org

पीत-पद्म लेश्या

कुल उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– 4 जाति	– 4
– स्थावर-4	– 4
– आतप	– 1
– नरक-2	– 2
– नरकायु	– 1
– तिर्यंचानुपूर्वी	– 1
– तीर्थंकर	– 1
कुल	108

एकेन्द्रिय, विकलत्रय, अपर्याप्त जीवों के अशुभ लेश्या ही पायी जाती है, इसलिये तत्संबंधी प्रकृतिया उदय-योग्य नहीं हैं ।

नारकी के अशुभ ही लेश्या होती है, अतः तत्संबंधी प्रकृतिया उदय-योग्य नहीं हैं ।

तीर्थंकर प्रकृति मात्र शुक्ल लेश्या और अलेश्या के साथ ही उदय-योग्य है, अतः उसे घटाया ।

पीत-पद्म में उदय-व्युच्छित्ति (108)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	1	103	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2, मनु. आनु. = 5
2	4	102	1 + 5 = 6
3	1	98	5 + सम्यक्त्व, आ-2, 2 आनु. = 10
4	13	100	6 + आ-2 = 8
5	8	87	19 + आ-2 = 21
6	5	81	27
7	4	76	32

शुक्ल लेश्या

शुक्ल लेश्या में तीर्थंकर प्रकृति उदय-योग्य है, अतः उदय-योग्य प्रकृतिया = 108 + तीर्थंकर = 109

शुक्ल लेश्या में रचना पीत, पद्म की तरह । परन्तु गुणस्थान 13 बनाना । 13वें गुणस्थान में व्युच्छित्ति 42 की होगी ।

www.JainKosh.org

भव्विदरुवसमवेदग-खइये सगुणोघमुवसमे खइए ।
ण हि सम्ममुवसमे पुण, णादितियाणू य हारदुगं ॥328॥

☸अर्थ— भव्य, अभव्य, उपशम सम्यक्त्व, वेदक (क्षायोपशमिक) सम्यक्त्व और क्षायिक सम्यक्त्व मार्गणाओं में अपने-अपने गुणस्थान के कथन की तरह जानना ।

☸विशेष बात यह है कि उपशम सम्यक्त्व तथा क्षायिक सम्यक्त्व में सम्यक्त्व प्रकृति उदय-योग्य नहीं है । तथा

☸उपशम सम्यक्त्व में आदि की नरक-गत्यानुपूर्वी आदि तीन आनुपूर्वी प्रकृतियाँ और आहारक-2 – ये प्रकृतियाँ उदय-योग्य नहीं हैं ॥328॥

भव्य मार्गणा

भव्य जीवों के सर्वकथन ओघवत् जानना ।

अभव्य जीवों के मिथ्यात्व गुणस्थान में उदय-योग्य प्रकृतिया 117 हैं ।

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व मार्गणा
उपशम सम्यक्त्व

चतुर्थ गुणस्थान में उदय-योग्य	104
–नरक, मनुष्य, तिर्यंच आनुपूर्वी	–3
– सम्यक्त्व	–1
कुल	100

प्रथमोपशम सम्यक्त्व में मरण नहीं होता । इसलिये इसकी अपेक्षा किसी आनुपूर्वी का उदय नहीं होता । परन्तु द्वितीयोपशम सम्यक्त्व में मरण संभव है, इसकी अपेक्षा देवानुपूर्वी उदय-योग्य है । क्योंकि द्वितीयोपशम से मृत जीव देव में ही जन्म लेते हैं ।

उपशम सम्यक्त्व में सम्यक्त्व प्रकृति का प्रशस्त उपशम होता है, अतः वह उदय-योग्य प्रकृति नहीं है।

मिस्साहारस्सययया, खवगा चडमाणपढमपुव्वा य ।
पढमुवसम्मा तमतम-गुणपडिवण्णा य ण मरंति ॥1॥
अणसंजोजिदमिच्छे, मुहुत्तअंतोत्ति णत्थि मरणं तु ।
कदकरणिज्जं जाव दु, सव्वपरट्ठाण अट्ठपदा ॥2॥जुम्मं ।

❁ अर्थ— निर्वृत्त्यपर्याप्तक अवस्था का धारक, आहारक मिश्रयोग का धारण करने वाला, क्षपक श्रेणी वाला, उपशमश्रेणी चढ़ने में अपूर्वकरण नामा आठवें गुणस्थान के पहले भाग वाला, तमस्तमक नाम की सातवीं नरकभूमि में सम्यक्त्व गुणसहित और प्रथमोपशम सम्यक्त्वी – इन अवस्थाओं वाले जीव मरते नहीं हैं । और

❁ अनन्तानुबंधी कषाय का विसंयोजन करके अन्य कषायरूप परिणमाने वाला सम्यग्दृष्टि यदि मिथ्यात्व गुणस्थान को प्राप्त हुआ हो तो उसका अंतर्मुहूर्त तक मरण नहीं होता । और दर्शनमोह के क्षय करने वाले जीव के जब तक कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिपना नहीं होता है तब तक मरण नहीं होता है । इस प्रकार इन सब आठ स्थानों में मरण नहीं है ॥1॥2॥

www.JainKosh.org

8 अवस्थाएं जिनमें जीव का मरण नहीं होता

निर्वृत्त्यपर्याप्तक अवस्था का धारक,

आहारक मिश्रयोग का धारण करने वाला,

क्षपक श्रेणी वाला,

उपशमश्रेणी चढ़ने में अपूर्वकरण नामा आठवें गुणस्थान के पहले भाग वाला,

सातवीं नरकभूमि में सम्यक्त्व, सासादन गुणसहित

प्रथमोपशम सम्यक्त्वी

अनन्तानुबंधी कषाय का विसंयोजन करने वाला सम्यग्दृष्टि यदि मिथ्यात्व गुणस्थान को प्राप्त हुआ हो तो उसका अंतर्मुहूर्त तक मरण नहीं होता ।

दर्शनमोह के क्षय करने वाले जीव के जब तक कृतकृत्यवेदक सम्यग्दृष्टिपना नहीं होता है तब तक मरण नहीं होता है ।

उपशम सम्यक्त्व में उदय-व्युच्छित्ति (100)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
4	14	100	0
5	8	86	14
6	3	78	22
7	3	75	25
8	6	72	28
9	6	66	34
10	1	60	40
11	2	59	41

www.JainKosh.org

वेदक सम्यक्त्व में उदय-व्युच्छित्ति (106)

चतुर्थ गुणस्थान में उदय-योग्य	104
+ आहारक-2	+2
कुल	106

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
4	17	104	आहारक-2
5	8	87	17 + 2 = 19
6	5	81	25
7	4	76	30

खाइयसम्मो देसो, णर एव तदो तहिं ण तिरियाऊ ।
उज्जोवं तिरियगदी, तेसिं अयदम्हि वोच्छेदो ॥329॥

❁अर्थ— देशसंयत नामक पाँचवें गुणस्थान में रहने वाला क्षायिक सम्यग्दृष्टि मनुष्य ही होता है, इस कारण उसके तिर्यंच आयु, उद्योत और तिर्यंचगति – इन तीनों का उदय नहीं है । इसीलिये इन तीनों की उदय-व्युच्छित्ति असंयत-गुणस्थान में हो जाती है ॥329॥

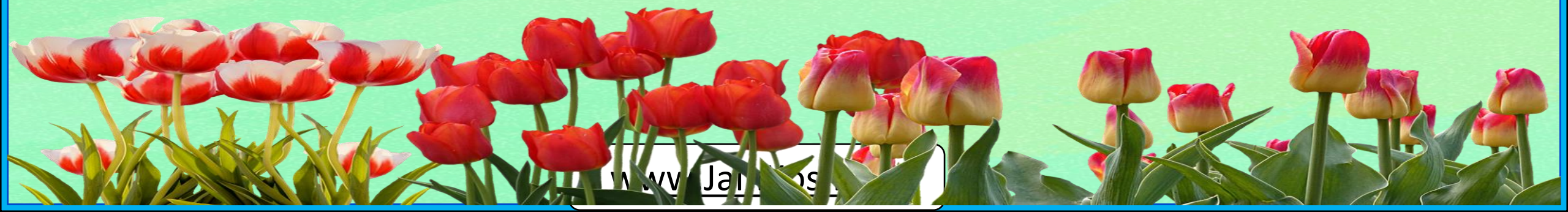

क्षायिक सम्यक्त्व

चतुर्थ गुणस्थान में उदय-योग्य	104
+ आहारक-2	+ 2
+ तीर्थंकर	+ 1
कुल	107
– सम्यक्त्व	– 1
कुल	106

www.JainKosh.org

क्षायिक सम्यक्त्व में उदय-व्युच्छित्ति (106)

क्षायिक सम्यग्दृष्टि तिर्यंच मात्र भोगभूमि में ही संभव हैं ।

इनके पंचम गुणस्थान नहीं पाया जाता ।

इसलिये तिर्यंच गति संबंधी 3 प्रकृतियों की व्युच्छित्ति चतुर्थ में ही हो जाती है ।

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
4	17 + तिर्यंच गति, तिर्यंच आयु, उद्योत = 20	103	आ-2, ती. = 3
5	5, (प्रत्या-4, नीच गोत्र)	83	20 + 3 = 23
6	5	80	25 + ती. = 26
7	3	75	30 + ती = 31
8	6	72	33 + ती. 34

www.JainKosh.org

शेष कथन ओघवत् ।

सेसाणं सगुणोघं, सण्णिस्स वि णत्थि तावसाहरणं ।
थावरसुहुमिगिविगलं, असण्णिणो वि य ण मणुदुच्चं ॥330॥
वेगुव्वछ पणसंहदि-संठाण सुगमण सुभगआउतियं ।
आहारे सगुणोघं, णवरि ण सव्वाणुपुव्वीओ ॥331॥जुम्मं ।

❁अर्थ— शेष मिथ्यात्व, सासादन, मिश्रसम्यक्त्व – इन तीनों में अपने-अपने गुणस्थान की तरह उदयादि जानना ।

❁संज्ञी मार्गणा में संज्ञी के भी सामान्य 122 में से आतप, साधारण, स्थावर, सूक्ष्म, एकेन्द्रिय, विकलत्रय तथा तीर्थंकर प्रकृति – इस प्रकार 9 प्रकृतियाँ उदय-योग्य नहीं हैं ।

❁असंज्ञी के मनुष्य-2, उच्च गोत्र, वैक्रियिक-षट्क, पहले पाँच संहनन, आदि के पांच संस्थान, प्रशस्त विहायोगति, सुभगादि तीन, नरकादि 3 आयु – ये छब्बीस प्रकृतियाँ उदय-योग्य नहीं हैं। इस कारण मिथ्यादृष्टि की 117 में से 26 घटाने पर 91 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।

❁आहार मार्गणा में आहारक अवस्था में सामान्य गुणस्थानवत् उदयादि समझना, परंतु चारों आनुपूर्वी प्रकृतियों का उदय नहीं होता । इस कारण उदय-योग्य 118 प्रकृतियाँ हैं ॥330॥331॥

www.JainKosh.org

सम्यक्त्व मार्गणा

मिथ्यात्व गुणस्थान में उदय-योग्य 117 प्रकृतिया हैं ।

सासादन सम्यक्त्व में उदय-योग्य 111 प्रकृतिया हैं ।

मिश्र में उदय-योग्य 100 प्रकृतिया हैं ।

www.JainKosh.org

संज्ञी मार्गणा

उदय-योग्य प्रकृतिया	122
– एकेन्द्रिय, विकलत्रय	– 4
– स्थावर-3, आतप	– 4
– तीर्थंकर	– 1
कुल	113

Home-Work

संज्ञी मार्गणा की रचना स्वयं बनाइये ।

www.JainKosh.org

संज्ञी में उदय-व्युच्छित्ति (113)

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	मिथ्यात्व, अपर्याप्त	109	सम्यक्त्व, मिश्र, आ-2 = 4
2	4 (अन-4)	106	2 + 4 + नारकानुपूर्वी = 7
3	1	100	6 + सम्यक्त्व, आहा.-2 + 4 आनु. = 13
4	17	104	7 + आहा-2 = 9
5	8	87	24 + आहा-2 = 26
6	5	81	32
7	4	76	37
8	6	72	41
9	6	66	47
10	1	60	53
11	2	59	54
12	57	57	56

www.JainKosh.org

असंज्ञी में उदय-व्युच्छित्ति (91)

कुल उदय-योग्य प्रकृतियाँ	122
– वैक्रियिक-6	– 6
– देवायु, नरकायु	– 2
– मनुष्य-2	– 2
– मनुष्यायु	– 1
– उच्च गोत्र	– 1
– 5 संहनन	– 5
– 5 संस्थान	– 5
– प्रशस्त विहायोगति	– 1
– सुभग, सुस्वर, आदेय	– 3
– आहारक-2	– 2
– तीर्थंकर	– 1
– सम्यक्त्व	– 1
– मिश्र	– 1
कुल	91

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	5, स्त्यान-3, परघात, उच्छ्वास, उद्योत, दुःस्वर, अप्रशस्त विहायोगति = 13	91	0
2	9	78	13

कम्मे व अणाहारे, पयडीणं उदयमेवमादेसे ।
कहियमिणं बलमाहव-चंदच्चियणेमिचंदेण ॥332॥

- अर्थ— अनाहारक अवस्था में कार्मण काययोग की तरह 89 प्रकृतियाँ उदय-योग्य हैं ।
- इस प्रकार मार्गणास्थानों में ये प्रकृतियों का उदय बलभद्र और नारायण द्वारा पूजित ऐसे नेमिनाथ तीर्थंकर देव ने, अथवा भाई बलदेव और माधवचन्द्र त्रैविद्यदेव से पूजित ऐसे नेमिचन्द्र सिद्धान्तचक्रवर्ती ने कहा है – ऐसा जानना ॥332॥

www.JainKosh.org

आहार मार्गणा

आहारक में 4 आनुपूर्वी प्रकृतिया उदय-योग्य नहीं हैं, क्योंकि विग्रह गति में जीव आहारक नहीं होता ।

अतः उदय-योग्य प्रकृतिया 122 – 4 = 118

व्युच्छित्ति गुणस्थानवत् । मात्र चतुर्थ में 17 के स्थान पर 13 की व्युच्छित्ति होगी ।

www.JainKosh.org

अनाहारक

उदय-योग्य प्रकृतिया कार्मण काययोग की भांति 89 हैं ।

गुणस्थान	उदय-व्युच्छित्ति	उदय	अनुदय
1	3	87	सम्यक्त्व, तीर्थंकर = 2
2	9, स्त्रीवेद	81	3 + 2, नरक आयु, नरक-2 = 8
4	15+7+0+1+6+5+1+0+16 = 51	75	13 + तीर्थंकर = 14
13	13	25	64
14	12	12	77

www.JainKosh.org

- Reference : गोम्मटसार कर्मकांड, सम्यग्ज्ञान चंद्रिका,

Presentation developed by

Smt. Sarika Vikas Chhabra

- For updates / feedback / suggestions, please contact
  - Sarika Jain, sarikam.j@gmail.com
  - www.jainkosh.org
  - ☎: 94066-82889

☸ इसी विषय के विडियो लेक्चर हमारे चैनल पर उपलब्ध हैं । आप अवश्य लाभ लें । www.Jainkosh.org/wiki/Videos पेज पर जाएँ एवं प्लेलिस्ट चुनें ।